RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 72 अंक : 19
सृष्टि संवत् 1960853116
9 अगस्त 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–72, अंक : 19, 6/9 अगस्त 2015 तदनुसार 24 श्रावण सम्वत् 2072 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

जीव तू सिद्धि के लिए पैदा हुआ है

-ले० श्री स्वामी वेदानंद जी (दयानन्द) तीर्थ

वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।
स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्।।

–ऋ० ५।३४।४

शब्दार्थ-हे इन्द्रः-ऐश्वर्याभिलाषिन् जीव! **तू हि**-सचमुच **वृषा**-बलवीर्ययुक्त, समर्थ **असि**-है, तू **राधसे**-सिद्धि के लिए, ऐश्वर्य के लिए **जज्ञिषे**-उत्पन्न हुआ है, **ते**-तेरा **शवः**-बल **वृष्णि**-सुखवर्षक है **ते**-तेरा **स्वक्षत्रम्**-घाव भरने का अपना सामर्थ्य है, अपनी त्रुटियों को पूरा कराने का अपना बल है। **ते** -तेरा **मनः**-मन **धृषत्**-प्रौढ़ है और **पौंस्यम्**-पुंस्त्व, शौर्य्य **सत्राहम्**-सत्याचरणादि है।

व्याख्या-संसार में प्रायः मत-मतान्तर जीव को निर्बल, हीनवीर्य मानते हैं। वेद जीव का वास्तविक स्वरूप बताता है। निःसन्देह भगवान् की रचना अत्यन्त अद्भुत है, परन्तु जीव की कृति भी बहुत विलक्षण है। आग जलाना, कूप खोदना, नदियों से नहरें निकालना, कृषि करना, मकान बनाना आज साधारण से कार्य प्रतीत होते हैं, किन्तु सोचिए, जब पहले-पहल ये कार्य किए गए होंगे, तब ये कितने कष्टसाध्य, मस्तिष्क को थका देने वाले हुए होंगे। रेल, तार, जहाज, वायुयान, बेतार का तार, बिजली के प्रदीप, वनस्पति तैल, घृत, अन्न से भोजन पकाना, गुड़, शक्कर, खांड, चीनी, फलों के आचार-मुरब्बे, सुवर्ण आदि धातु के आभूषण, मोटर, पैट्रोल, मिट्टी का तेल, पीतल, ताम्र आदि के पात्र, लोहा आदि के उपकरण, शस्त्र-अस्त्र तथा अन्य उपयोगी पदार्थ, विविध धातुओं के भस्म, पानी से बर्फ, सीमेंट से पत्थर बनाना आदि, कार्य कहां तक गिनाएं। युद्ध के उपयोगी आयुध इनसे पृथक् हैं। मनुष्य ने इतने पदार्थों की सृष्टि कर डाली है कि उसे छोटा-मोटा विधाता मानने में कोई दोष नहीं है। प्रतिदिन हमारे व्यवहार में आने वाले विद्युत्प्रदीप आदि आज सरल प्रतीत होते हैं, किन्तु इनके निर्माण में मनुष्यों को कितना परिश्रम करना पड़ा, इसकी कल्पना भी आज कठिन है।

ये सारे-के-सारे पदार्थ जीव ने अपने और अपने-जैसों के सुख के लिए बनाए हैं, अतः वेद कहता है-**'वृषा हि असि'** सचमुच तू वृषा है, सुख बरसाने वाला है। तेरा स्वभाव तो सुखी होने तथा सुखी करने का है। तू संसार के लिए सुख के साधन जुटा, सबको सुख सम्पन्न बना। यदि मनुष्य केवल अपने सुखसाधन को ही जीवन का लक्ष्य मान लेता है तो भयंकर संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। जब वह दूसरे के सुखों का भी विचार करता है तब उसका परिवार बढ़ता है और उससे उसकी समृद्धि की वृद्धि होती है। मनुष्य के लिए यह आवश्यक ही है कि वह सिद्धि के साधनों का अवलम्बन करे, क्योंकि वेद में उसे सम्बोधन करके कहा है कि तू-**'राधसे जज्ञिषे'** सिद्धि के लिए उत्पन्न हुआ है। तुझे नरतन मिला ही इसलिए है कि तू संसार की सुख-सामग्री उत्पन्न कर और बढ़ा। पूर्वजों के बुद्धि-वैभव तथा हस्तकौशल का लाभ हमने उठाया है। हमारी सफलता इसी में है कि आगे आने वाली सन्तान के लिए पूर्व की अपेक्षा अधिक सम्पत्ति छोड़ जाएं। मनुष्य और पशु में यह भारी भेद है। पशु में सामाजिक जीवन की झलक अवश्य होती है, किन्तु जिस प्रकार मनुष्यों में एक-दूसरे के सुख-दुःख में सम्मिलित होने और सन्तान के लिए सुख-सामग्री छोड़ जाने की स्वाभाविक भावना है, पशुओं में उसका सर्वथा अभाव है।

मनुष्य जन्म सिद्धि के लिए हुआ है, असफलता के लिए नहीं हुआ है। वैदिक तो दृढ़ विश्वास से कहता है-

'अजैष्माद्य' (अथर्व. १६।६।१) आज ही हमारा विजय है।

कल तक की प्रतीक्षा सह्य नहीं है। जाने कल क्या हो जाए ? सिद्धि के लिए, कार्यसिद्धि के लिए, बल चाहिए। बलाभिलाषी को वेद कहता है-

'वृष्णि ते शवः'-तेरा बल भी प्रबल है, सुखदायी है।

यदि कोई विघ्न आए तो घबराने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तेरा बल जहां वृष्णि है, वहां **स्वक्षत्रम्** अपनी त्रुटि को पूरा करने में समर्थ है। तेरा मन भी धृषत्-प्रौढ़ है और-

'सत्राहं पौंस्यम्'-वीरता सदाचरण आदि है।

इस अन्तिम वाक्य में जीव के सामर्थ्य का मूल बताया गया है। इसे कभी विस्मरण न करना चाहिए। सत्यस्वरूप आत्मा यदि सत्य से विरहित हो जाता है तो अपने स्वरूप का आप विघात करता है। सत्य से भ्रष्ट होने पर पाप-सर्प उसे डस लेता है और उसकी आत्मिक मृत्यु हो जाती है। जिस लक्ष्य के लिए जीव जगत् में आया था, उससे वंचित हो जाया करता है।

कितने हैं जिन्हें तत्व का ज्ञान है। **-स्वाध्याय संदोह से साभार**

आर्य समाज में पाखण्ड और अन्ध विश्वास पसर रहे हैं

-ले० इन्द्रजित देव चूना भट्टियां, यमुनानगर

सन् १९९६ में शास्त्रार्थ महारथी व वैदिक धर्म के सुयोग्य प्रवक्ता स्व. पंडित बिहारी लाल शास्त्री जी का एक सुलेख 'सार्वदेशिक' दिल्ली के एक अंक में प्रकाशित हुआ था। इसका प्रकाशन हमारे उपरोक्त शीर्षक से मिलते-जुलते शीर्षक 'आर्य समाज में भी अन्ध विश्वास पनपने लगा' से हुआ था। इसमें श्री पंडित बिहारी लाल जी ने आर्यों को सावधान करते हुए लिखा था कि योग व यज्ञ के नाम पर चल रहे मिथ्या विश्वासों को पनपने ही न दें।

तब से....अब....तक गंगा व यमुना में बहुत जल बह चुका है। पेड़ों से कितने ही पुष्प झड़ चुके हैं तथा कितने ही नए फूल उग आए हैं। बहुत परिवर्तन हो गए हैं परन्तु पंडित जी के समय से आर्य समाज में आरम्भ हुए अन्धविश्वास व पाखण्ड बहुत गहराई से पसर रहे हैं। न कोई धर्मार्य सभा के निर्णयों को मानता है, न ही विभिन्न गोष्ठियों में पारित हुए प्रस्तावों को क्रियात्मक रूप देने को तैयार हैं। कुछ विद्वान तो ऐसे भी देखने में आ रहे हैं, जो इन प्रस्तावों पर हुई चर्चाओं में उपस्थित रहकर शुद्ध सैद्धान्तिक पक्ष के समर्थक रहे हैं परन्तु बाद में यदि किसी आर्य समाज ने उन्हें अपने उत्सव में आमन्त्रित करके सिद्धान्तों व विद्वत् गोष्ठियों में लिए गए निर्णयों के विपरीत कुछ कार्य कराना चाहा है, तो उन्होंने वैसा भी कर दिया है। हमारा यह कथन बहुकुण्डीय यज्ञ के विषय में विशेषत: लागू होता है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा ने अपनी 20 जनवरी, 2000 की बैठक में प्रस्ताव संख्या 2 के माध्यम से यह निर्णय लिया था कि बहुकुण्डीय यज्ञ शास्त्र सम्मत नहीं है। ये बन्द होने चाहिएं। 4 अगस्त से 11 अगस्त, 1996 तक आर्य समाज, जनकपुरी, सी-3 पार्क, दिल्ली में उन्नीस विद्वानों की गम्भीर चर्चा हुई थी व अन्य विषयों के अतिरिक्त बहु कुण्डीय यज्ञ का विषय भी विचारार्थ रखा गया था। सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया था कि शास्त्रीय व वैदिक प्रमाण न मिलने के कारण यह यज्ञ अशास्त्रीय व अवैदिक है। इसी प्रकार की लगभग 50 विद्वानों की एक गोष्ठी 3 दिनों तक नवम्बर 2005 में कुरुक्षेत्र में आयोजित हुई थी। इसमें भी उपरोक्त निर्णय का ही समर्थन किया गया था परन्तु 16 जनवरी, 2006 ई. को कुरुक्षेत्र में ही मेरठ ज़िला के एक सन्यासी के ब्रह्मत्व में बहुकुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया था।

इस यज्ञ का आयोजन एक 'वैदिक यज्ञ अनुसंधान संस्थान' की ओर से किया गया। इस 'संस्थान' ने यत्र-तत्र कई ऐसे यज्ञ कराए हैं। इसके पास न तो कोई अनुसन्धानशाला है, न ही कोई अनुसन्धानकर्त्ता है। न किसी यज्ञ से पूर्व पिछले यज्ञ के परिणाम भी बताए गए हैं। फिर भी इस का नाम वैदिक यज्ञ अनुसन्धान संस्थान है। यज्ञ से पूर्व इसे ऐतिहासिक व अद्वितीय यज्ञ घोषित किया गया। यह घोषणा भी झूठी सिद्ध हुई कि इसमें एक लाख याज्ञिक यज्ञ करेंगे। कुछ कुण्डों में अग्नि जल रही थी, कुछ कुण्डों से धुआं उठ रहा था तथा कुछ कुण्ड याज्ञिकों की प्रतीक्षा में ही पड़े रह गए। यह दृश्य हमारा स्वयं का देखा है। ब्रह्मा जी ने संवाददाताओं से प्रार्थना की कि जिन कुण्डों से धुआं उठ रहा है, उनके चित्र न लिए जाएं। एक व्यक्ति ने कुल कुण्डों की संख्या ली व उसने बताया कि कुल कुण्ड 2,000 सहस्त्र थे। इस विवरण से स्पष्ट होता है कि यह कैसा यज्ञ था व इसमें कितने झूठ व छल-कपट का आश्रय लिया गया।

कई लोग अन्यत्र भी बहु-कुण्डीय यज्ञों का आयोजन कर रहे थे। थोड़े अन्तर के साथ लगभग यही दृश्य व स्थिति आप वहां भी देख सकते हैं। यह तर्क दिया जाता है कि एक ही समय में आर्य समाज के कार्यक्रम में अनेक गैर आर्य भी यदि यज्ञ करना सीखते हैं व आर्य समाज के विचारों को सुनते हैं तो इसमें हर्ज ही क्या है ? हमारा निवेदन है कि जिन्होंने कभी यज्ञ नहीं किया, उन्हें घण्टा भर में आप यज्ञ करना सिखा ही नहीं सकते। आर्य समाज में यज्ञ करने वालों में से एक भी व्यक्ति ने केवल एक-दो घंटों में एक बार यज्ञ करके या देखकर यज्ञ करना सीखा ही नहीं। एक बार यज्ञ में बैठने वाला व्यक्ति तो यह भी नहीं जान पाता कि आचमन दाएं हाथ से करना है अथवा बाएं हाथ से। ठीक इसी प्रकार से अंग-स्पर्श करना भी प्रथम बार में नहीं सीखा जाता है। पहली बार यजमान बने व्यक्ति को चाहे सोने के भी हवन-कुण्ड व यज्ञ पात्र घर में ले जाकर यज्ञ करने हेतु आप दे दें तो भी वह हवन स्वयं नहीं कर पाएगा। गैर आर्य समाजी भी हवन करते हुए यदि बहुकुण्डीय यज्ञ में आएंगे तो आर्य समाज के प्रति उनकी श्रद्धा बढ़ेगी, इस तर्क का सविनय उत्तर यही है कि ऐसे यज्ञों के बाद कहीं भी आर्य समाजों के साप्ताहिक या अन्य सत्संगों में नए लोग आए हैं, ऐसा देखने में नहीं आया। यदि आप उन्हें यज्ञ व आर्य समाज में सच्चे हृदय से लाना चाहते हैं तो हवन प्रशिक्षण के लिए शिविर लगाइए, उसमें हवन करने की आवश्यकता व इसके लाभ समझाइए। इस शिविर में हवन की सभी प्रक्रियाओं व मंत्रों के अर्थ बताइए, जैसा कि दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ (गुजरात) के आचार्य ज्ञानेश्वर जी, हैदराबाद के आचार्य वेद भूषण जी तथा कुछ अन्य विद्वान् करते हैं। यह कार्य नि:शुल्क करिए, कराइए। इस प्रकार आप की भावना का सच्चा प्रमाण मिलेगा तथा हवन का सही प्रचार व प्रशिक्षण होगा। जिस प्रकार के बहुकुण्डीय यज्ञ चल रहे हैं, उनसे आयोजकों व ब्रह्मा जी को आर्थिक लाभ भले ही हो जाए, अन्य किसी को किसी प्रकार का भी लाभ नहीं हुआ, न ही हो सकता है। विपरीत इसके हम यह कहने की धृष्टता करे बिना नहीं रहेंगे कि ऐसे हवनों से हानि ही होती है व पाप कर्मों को ही बढ़ावा मिलता है।

बहुकुण्डीय यज्ञों में याज्ञिक ब्रह्मा जी से दूर-दूर तक बैठते हैं। ब्रह्मा जी को ऐसी 'दिव्य दृष्टि' प्राप्त नहीं होती जिससे वे अपने आसन पर बैठे-बैठे यह जान लें कि दूर-दूर तक बैठे सभी यजमानों ने अग्निहोत्र की किसी क्रिया को कर लिया है अथवा नहीं किया। न ही ब्रह्मा जी यह जान पाते हैं कि अग्निहोत्र की किस क्रिया को किस यजमान ने ठीक किया है या गल्त किया है। इस प्रकार की जानकारी के अभाव में यदि अग्निहोत्र आगे चलाया जाता है तो बड़ा दोषी ब्रह्मा जी के अतिरिक्त अन्य कोई न होगा क्योंकि जिसके अधिकार अधिक होते हैं, कर्त्तव्य भी उसी के अधिक होते हैं, यह एक सहज स्वाभाविक सिद्धान्त हैं। ऐसे यज्ञ पूर्ण अनुशासन व पूर्ण प्रक्रियाओं सहित सम्पन्न हो ही नहीं पाते। पारस्कर गृहसूत्र के हरिहर भाष्य के अनुसार जहां यज्ञ अव्यवस्थित, अवैज्ञानिक व अनुशासनहीन विधि से होते हैं, वहां भूख, प्यास, क्रोध के वशीभूत होकर तथा मन्त्रहीन तथा अग्नि के अच्छी प्रकार न जलने पर अथवा धुआं निकलते रहने पर जो व्यक्ति हवन करता है, वह अन्य जन्म में अन्धता को प्राप्त होता है। जिन भद्रपुरुषों को आर्य समाजों से घटती उपस्थिति पर चिन्ता है, उन्हें यदि सच्चे अर्थों में उपस्थिति बढ़ाने की तड़प है तो पूर्ववत् आर्य समाजों में सेवा कार्यों को आरम्भ करें, हवन-प्रशिक्षण शिविर आयोजित करें, विधर्मियों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारें। अपने व्यक्तिगत व सामाजिक-पारिवारिक जीवन में सत्यता व स्वाध्याय की स्थापना करें। बलिदान व त्याग के ऊंचे उदाहरण प्रस्तुत करें, अर्थ शुचिता व निस्वार्थता के आदर्श को साकार करके दिखाएं, अपने राष्ट्र के सम्मुख मुंह बाएं खड़ी विभिन्न समस्याओं के सार्थक व क्रियात्मक समाधान देने की व्यवस्था करें, शिक्षा, राजनीति, धर्म व युवाओं से सम्बन्धित अनसुलझे प्रश्नों के उपयोगी उत्तर देने के लिए ठोस कार्यक्रम पेश करें।

(क्रमश:)

सम्पादकीय.....✍

आतंकवादी की फांसी पर इतना बवाल क्यों?

मुम्बई में 1993 में हुए आतंकी हमले के दोषी याकूब मेमन को फांसी होने के साथ ही उन लोगों को न्याय मिल गया जिनके परिवार के सदस्य इस हमले में मर गए थे। याकूब मेमन की फांसी पर जिस तरह से तथाकथित बुद्धिजीवियों द्वारा तथा राजनीतिक पार्टियों द्वारा बयानबाजी की जा रही है उससे उनकी देशद्रोही की छवि स्पष्ट रूप से सामने आती है। अपने वोट बैंक के लिए और किसी सम्प्रदाय को खुश करने के लिए ये स्वार्थी नेता इस हद तक गिर सकते हैं इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। एक आतंकवादी को किसी धर्म के साथ, मजहब के साथ, सम्प्रदाय के साथ जोड़ना कहां तक उचित है। क्या इस प्रकार एक आतंकवादी की फांसी पर सवाल उठाना अपने आपको धर्म निरपेक्ष साबित करने की कोशिश है? याद रखो आतंकवादी का कोई धर्म नहीं होता, मजहब नहीं होता, सम्प्रदाय नहीं होता। आतंकवादी सिर्फ और सिर्फ आतंकवादी है, चाहे वह कोई भी हो।

30-07-2015 को सुबह जिस समय से याकूब मेमन को फांसी की सजा दी गई है उसी समय से लेकर एक नई बहस ने जन्म ले लिया है। यह न खत्म होने वाली बहस लगातार न्यूज चैनलों पर दिखाई जा रही है। इस बहस में कई बुद्धिजीवियों के द्वारा फांसी को गलत सिद्ध किया जा रहा है, कोई नेता कह रहा है कि याकूब के साथ ज्यादती हुई है, कोई किसी राजनीतिक पार्टी को दोषी मान रहा है। तरह-तरह के सवाल उठाए जा रहे हैं, कोई न्यायपालिका को कटघरे में खड़ा कर रहा है। तरह-तरह के तर्क देकर जिस तरह से एक आतंकवादी का पक्ष रखा जा रहा है उसे देखकर शर्म आती है कि आज की राजनीति किस हद तक गिर गई है। बुद्धिजीवियों की बुद्धि पर तरस आता है कि परमात्मा ने उन्हें कैसी बुद्धि दी है जो एक आतंकवादी के लिए नैतिकता की बात करते हैं। जिसके कारण इतनी मौतें हुई, जो मानवता का हत्यारा है, जिसमें इन्सानियत नाम की कोई चीज ही नहीं है, उस आतंकवादी का पक्ष लेना कहां तक बुद्धिसंगत और न्यायसंगत कहा जा सकता है। नेताओं की बात तो समझ में आती है कि वे तो अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं, अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ये किसी भी हद तक जा सकते हैं। परन्तु जो अपने आपको बुद्धिजीवी कहलाते हैं उनकी बात समझ में नहीं आती है कि वे किस ढंग से फांसी की सजा को गलत सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं। क्या ऐसे बुद्धिजीवियों को मुम्बई का वो आतंकी हमला नजर नहीं आता जिसमें सैकड़ों निर्दोष लोगों की जानें गई थी। इस प्रकार के तथाकथित बुद्धिजीवियों के द्वारा एक आतंकवादी की सजा पर दुःख जताना कहां तक उचित है। ऐसे लोगों की हमदर्दी तब कहां गई थी जब उस आतंकवादी ने सारी मुम्बई को हिला कर रख दिया था?

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि व्यक्ति जिस प्रकार का व्यवहार समाज के प्रति करता है उसके प्रति भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। चाणक्यनीति के 17 वें अध्याय में चाणक्य ने लिखा है कि-

कृते प्रतिकृतं कुर्याद् हिंसने प्रतिहिंसनम्।
तत्र दोषो न पतति दुष्टे दुष्टं समाचरेत्।।

अर्थात् उपकार करने वाले के प्रति प्रत्युपकार करना चाहिए, हिंसा करने वाले के प्रति हिंसा का व्यवहार करना चाहिए। ऐसा करने पर दोष नहीं होता क्योंकि दुष्ट के प्रति दुष्टता का आचरण करना चाहिए, वही उचित होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के सातवें नियम में लिखा है- सबके साथ प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए। उपकारी के प्रति प्रत्युपकार करना चाहिए परन्तु जो हमारा नाश करने पर उतारू हैं, हमारी संस्कृति, सभ्यता और धर्म का ही नाश करने पर तुला हुआ है, ऐसे दुष्टों का तो वध ही कर देना चाहिए। वेद का आदेश है-

मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः।

अर्थात् हे मनुष्य! तू मायावियों को, दुष्टों को, छल करने वालों को मार गिरा। महर्षि व्यास का कथन है कि-

जो मनुष्य जिसके साथ जैसा व्यवहार करे उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, यह धर्म है। ठगी से व्यवहार करने वाले के साथ ठगी का व्यवहार करना चाहिए और भला करने वाले के साथ भलाई का व्यवहार करना चाहिए।

इस प्रकार शास्त्रों में, वेदों में दुष्टों की निन्दा की गई है और यथापूर्वक व्यवहार करने का आदेश दिया गया है। फिर हम उस आतंकवादी के लिए किस प्रकार माफी की अपील करते हैं। किसने ऐसे लोगों को बुद्धिजीवी मान लिया है जिन्हें अपने शास्त्रों का, अपनी संस्कृति का, सभ्यता का ज्ञान ही नहीं है। किस आधार पर उन्हें बुद्धिजीवी मान लिया जाए? केवल इस आधार पर कि उन्हें टी. वी. चैनलों पर अपनी बात रखने का मौका मिल जाता है। ऐसे बुद्धिजीवियों को, नेताओं को, बुद्धिभ्रष्ट लोगों को मीडिया से दूर रखना चाहिए। मीडिया वालों को चाहिए कि ऐसे लोगों के वक्तव्य को प्रसारित ही न करें जिनसे लोगों में भ्रम फैलता है, समाज में अराजकता फैलती है, न्यायविदों के न्याय पर प्रश्न खड़े कर दिए जाते हैं। परन्तु न्यूज चैनलों पर एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में किसी भी मामले को इस प्रकार सनसनीखेज रूप में पेश किया जाता है जिससे समाज में गलत संदेश जाता है। देशद्रोह की बात करने वालों को तवज्जो नहीं देनी चाहिए। ऐसे स्वार्थी और भ्रष्ट नेताओं को टी. वी. चैनलों के सहारे अपनी राजनीति चमकाने का अवसर नहीं देना चाहिए। न्यायपालिका के न्याय पर संदेह करना न्यायपालिका के लिए खतरा है। किसी भी आतंकवादी का पक्ष लेना समाज में अपराध को बढ़ावा देता है। न्यायपालिका के निर्णय पर सभी राजनीतिक पार्टियों को एकमत होना चाहिए। राष्ट्रहित सबका लक्ष्य होना चाहिए चाहे वे किसी भी राजनीतिक पार्टी से सम्बन्धित हो। जहां पर राष्ट्र की एकता, अखण्ड़ता और अस्मिता की बात आती है वहां पर सभी को एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए, तभी देश के अन्दर अच्छा संदेश जाता है। जनहितकारी कार्यों में किसी को रूकावट नहीं डालनी चाहिए। लोकतन्त्र में प्रश्न उठाना उचित है लेकिन एक आतंकवादी की फांसी पर प्रश्न उठाना देशद्रोह को सिद्ध करता है। मानवता के हत्यारे के लिए न्यायपालिका के न्याय पर प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। इसी में लोकतन्त्र की गरिमा है। समाज के बुद्धिजीवियों को भी अपनी बुद्धि का उपयोग राष्ट्र के हितकारी कार्यों में करना चाहिए। अपनी संस्कृति, सभ्यता को बढावा देने के लिए करना चाहिए। ऐसे कार्यों से ही उनकी बुद्धिमता का पता चलेगा। व्यर्थ के विवाद में पड़ना बुद्धिमता नहीं है।

याकूब मेमन को फांसी देने से उन लोगों को न्याय मिला है जो इस आतंकी हमले का शिकार हुए थे। इसलिए हम सभी को इस फैसले का स्वागत करना चाहिए। न्यायपालिका की प्रशंसा करनी चाहिए न कि उनके फैसले पर सवाल खड़े करने चाहिए। ऐसे कार्यों में हम अपना पक्ष रखें जिससे समाज के अन्दर अच्छा संदेश जाए और हमारा राष्ट्र मजबूत हो।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

राजधर्म का आधार

-ले० महात्मा चैतन्यमुनि महर्षि दयानन्द धाम महादेव, सुन्दरनगर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी हमें संसार के इतिहास में एकमात्र ऐसे महापुरुष दिखाई देते हैं जो एक उच्चकोटि के वीतराग सन्यासी होते हुए भी समाज और राष्ट्र के दायित्वों से विमुख या उपराम नहीं लेते। यही नहीं हम यदि गहराई से उनके चिन्तन का अध्ययन करें तो हमें लगेगा कि वे बहुमुखी प्रतिभा के इतने धनी हैं कि कोई भी विषय उनसे अछूता नहीं रहा है। यहां हम उनके राजधर्म विषयक चिन्तन पर थोड़ा दृष्टिपात करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जहां अनेक विशेषताएं हैं, वहां उनकी एक मुख्य विशेषता यह है कि उन्होंने किसी नए मत व संप्रदाय की स्थापना नहीं की और न ही किसी पूर्वाग्रह के वशीभूत होकर अपने व्यक्तिगत सिद्धान्त ही लोगों पर थोपने का प्रयास किया है। उनकी मान्यताओं का आधार पूर्ण रूप से वेद रहा है क्योंकि वेद ही पूर्ण परमात्मा का निर्भ्रान्त एवं सार्वभौमिक ज्ञान है। उन्होंने स्वयं घोषणा की है कि उनकी कोई अलग संप्रदाय आदि चलाने की इच्छा नहीं है बल्कि जिस वैदिक ज्ञान का प्रचार और प्रसार ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक के ऋषियों-महर्षियों ने किया है उन्होंने भी उसी का अनुसरण करते हुए सामयिक चिन्तन लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है। उनके राजधर्म सम्बन्धी चिन्तन का आधार भी वेद और धर्म ही है। महर्षि दयानन्द ही सत्य के प्रबल पक्षधर रहे हैं और उनकी दृष्टि में सत्य ही सर्वोपरि ग्राहय है। उनके राजनीति सम्बन्धी चिन्तन का आधार भी यही सत्य और धर्म है। महर्षि दयानन्द जी ने अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ राजनीति के क्षेत्र को अत्याधिक महत्त्वपूर्ण माना है। इसलिए वे अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठे सम्मुलास के प्रारम्भ में ही मनु महाराज का उल्लेख करते हुए लिखते हैं-

मनु जी महाराज ऋषियों से कहते हैं कि चारों वर्ण और चारों आश्रमों के व्यवहार-कथन के पश्चात् राजधर्मों को कहेंगे कि जिस प्रकार का राजा होना चाहिए और जैसे हो उस का होना संभव तथा जैसे उसे परमसिद्धि प्राप्त होवे उसको सब प्रकार कहते हैं।

जैसा परम विद्वान् ब्राह्मण होता है, वैसा विद्वान्, सुशिक्षित होकर क्षत्रिय भी अपनी योग्यतापूर्वक इस राज्य की रक्षा न्याय से यथावत् करे। ईश्वर उपदेश करता है कि राजा और प्रजा के पुरुष मिल के (विदथे) सुख प्राप्ति और विज्ञान वृद्धि कारक राजा-प्रजा के सम्बन्ध रूप व्यवहार में (त्रीणि सदांसि) तीन सभा अर्थात् विद्यार्य सभा, धमार्य सभा, राजार्य सभा नियत करके (पुरूणि) बहुत प्रकार के (विश्वानि) समग्र प्रजा-सम्बन्धी मनुष्यादि प्राणियों को (परिभूषथ:) सब ओर से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करे।

महर्षि के उपरोक्त कथन से हमें उनके राजनीति सम्बन्धी विचारों का थोड़ा सा संकेत मिल जाता है। राज्य की चतुर्दिक उन्नति के लिए उन्होंने तीन सभाओं का उल्लेख किया है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में उन समस्त पहलुओं का विवेचन किया है। जिससे राज्य व्यवस्था सुचारू रूप से चल सके। राज्य व्यवस्था चलाने के लिए राजा का अपना चरित्र एवं व्यवहार कैसा तथा उसकी सभा समितियां और उन समितियों के कर्मचारियों आदि में किस प्रकार के गुण हों इन सब बातों पर उन्होंने मनन और चिन्तन करके सारी व्यवस्था का खुलासा हमारे सामने रखा है। जब तक राजा और अन्य कर्मचारियों का चरित्र और व्यवहार धार्मिकता से परिपूर्ण नहीं होगा तब तक सुराज्य-व्यवस्था की कल्पना हम नहीं कर सकते हैं।

राजा किसी भी राष्ट्र का प्रमुख होता है। इसलिए उसका श्रेष्ठ होना नितान्त आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी का कथन है-और इस पर भी ध्यान रखना चाहिए कि यथा राजा तथा प्रजा जैसा राजा होता है, वैसी ही उसकी प्रजा होती है, इसलिए राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी ऐसा व्यवहार तथा कार्य न करें जिससे जनता पर बुरा प्रभाव पड़े। मनु जी महाराज ने भी राजा और उसके सभासदों को काम-क्रोद आदि के कुपरिणामों का दिग्दर्शन कराते हुए उन्हें जितेन्द्रिय होने का आदेश दिया है।

राजा के महत्त्व और उसके दायित्वों को ध्यान में रखते हुए ही राजा को धार्मिकता से परिपूर्ण होने पर बल दिया गया है और इसलिए महर्षि जी मनु महाराज जी का उल्लेख करते हुए उसकी दिनचर्या का संकेत भी देते हैं। 'उत्थाय.... कोशहीनोऽपि पार्थिव:' का भाव वे इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं-जब पिछली प्रहर रात्रि रहे तब उठ, शौच और सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान, अग्निहोत्र, धार्मिक विद्वानों का सत्कार और भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करें। वहां खड़ा रहकर जो प्रजाजन उपस्थित हों उनको मान्य दे और उनको छोड़कर मुख्यमन्त्री के साथ राजव्यवस्था का विचार करें। पश्चात् उसके साथ घूमने को चला जाए। पर्वत के शिखर अथवा एकान्त घर व जंगल जिसमें एक शलाका भी न हो, वैसे एकान्त स्थान में बैठकर विरुद्ध भावना को छोड़ मन्त्री के साथ विचार करे। जिस राजा के गूढ़ विचार को अन्य जन मिलकर नहीं जान सकते, अर्थात् जिसका विचार गंभीर, शुद्ध परोपकारार्थ सदा गुप्त रहे, वह धनहीन भी राजा सब पृथिवी पर राज्य करने में समर्थ होता है। इसलिए अपने मन से एक भी काम न करे कि जब तक सभासदों की अनुमति न हो।

महर्षि जी के उपरोक्त विवेचन से बहुत ही बातें साफ हो जाती हैं। राजा को पूर्णतया आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होना अपेक्षित है तथा वह धीर, गंभीर और दूसरों को साथ लेकर चलने वाला हो, परोपकारी हो तथा जनता के दु:खों को दूर करने वाला हो। आज की राजनीति यदि दूषित हुई है तो उसका सबसे प्रमुख कारण यही है कि राजा का अपना चरित्र दोषरहित नहीं है। महर्षि दयानन्द जी महाराज की वेद के ऊपर अत्याधिक आस्था थी अत: उन्होंने वेदों के आधार पर अपनी राजधर्म सम्बन्धी विचारधारा को प्रस्तुत किया है। वेदों में राजा के चरित्र के बारे में विस्तार से चर्चा हुई है। महर्षि जी के उपरोक्त कथन का आधार भी हमें ऋग्वेद (1-73-3) में दृष्टिगत होता है कि

हमारा राजा वह होना चाहिए जो अपने चरित्रादि के कारण पृथिवी में प्रकाशित हो, मित्रवत् हमारा हित चाहने वाला हो, नगर के सदस्यों, राज्य के वीर पुरुषों और अन्य योग्य प्रतिनिधियों के माध्यम से जो शक्ति प्रयोग करता हो तथा पतिव्रता नारियों तक से भी परामर्श करने वाला हो। अथर्ववेद (1-21-1) में लिखा है कि-

राजा मंगल देने वाला, प्रजाओं का पालक और विशेषत: शत्रु को वश में करने वाला, बलवान् वनस्पति का रस पीने वाला, अभय करने वाला, शत्रुनाशक वीर तथा प्रजा को आगे ले जाने वाला होना चाहिए। (यजु. 9-40) के अनुसार राजा वह है जिसका कोई विरोधी न हो अर्थात् जिसके पक्ष में सारा देश हो, वह राज्य की अभिवृद्धि, कीर्ति और ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला हो। ऋग्वेद (8-25-8, 5-65-5 और 7-34-11) के अनुसार राजा नियमों का पालने करने वाला, सत्य के अनुसार चलने वाला, क्षात्रतेज से परिपूर्ण तथा साम्राज्य की उन्नति के लिए उत्तम कर्म करने वाला होना चाहिए। वह तेजस्वी, अत्यन्त ज्ञानी, उत्तम कर्म करने वाला सत्य और सरलता के साथ बढ़ने वाला तथा सत्य का संरक्षक होना चाहिए। क्योंकि राजा गमनशील राष्ट्रों का रूप है इसलिए उसके पास सब प्रकार का उत्तम क्षात्रतेज होवे अन्यथा वह राज्य का संरक्षण नहीं कर सकेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे सम्मुलास में जनता को सावधान करते हुए लिखा है कि वे किस प्रकार के राजा को चुने-

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सनातन धर्म और आर्य समाज

-ले० कृष्ण चन्द्र गर्ग 831 सैक्टर 10 पंचकूला, हरियाणा

(गतांक से आगे)

6. अवतारवाद-सनातन धर्म के लोग ऐसा मानते हैं कि कोई विशेष काम करने के लिए ईश्वर मनुष्य के रूप में जन्म लेता है। इसे वे ईश्वर का अवतार मानते हैं। आर्य समाज ऐसा नहीं मानता।

ईश्वर पहले ही सब जगह विद्यमान है। इसलिए उसके आने जाने की बात सार्थक नहीं है। ईश्वर इतना शक्तिशाली है कि वह सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी आदि सारे ब्रह्माण्ड को बनाता है। तो क्या किसी आदमी को मारने आदि छोटे काम उसके लिए मुश्किल हैं ? नहीं। इसलिए उसके मनुष्य रूप में आने की कल्पना सर्वथा व्यर्थ है, ईश्वर का अपमान है। वह तो सब मनुष्यों के अन्दर पहले ही विद्यमान है। ईश्वर न जन्म लेता है, न मरता है, वह सदा एकसा सब जगह रहता है।

महाभारत में श्री कृष्ण जी कहते हैं-**अहं हि तत् करिष्यामि परमपुरुषकारतः। दैवं तु न मया शक्यं कर्म कर्त्तुं कथंचन।।**

अर्थ-मैं एक श्रेष्ठ पुरुष की भान्ति अपनी मेहनत से तो काम करूंगा, परन्तु ईश्वर के विधान में दखल देना मेरे सामर्थ्य से बाहर है।

सीता हरण के बाद श्री रामचन्द्र जी लक्ष्मण से कहते हैं-

न मद्विधो दुष्कृत कर्मकारी मन्ये द्वितीयोऽस्ति वसुन्धरायाम्।
शोकेन शोको हि परम्पराया मामेति भिन्दन् हृदयं मनश्च।।

(वाल्मीकि रामायण-अरण्य काण्ड)

अर्थ-मैं समझता हूं कि इस भूमि पर मेरे समान दुष्कर्म करने वाला और कोई नहीं है क्योंकि शोक पर शोक मेरे हृदय और मन को भेदने को प्राप्त हो रहे हैं।

7. योगेश्वर श्री कृष्ण जी का पवित्र जीवन चरित्र-महाभारत में श्री कृष्ण जी का जीवन बड़ा पवित्र बताया गया है। उन्होंने जन्म से मृत्यु तक कोई भी बुरा काम किया हो-ऐसा नहीं लिखा। वे एक पत्नीव्रती थे। उनकी पत्नी थी रुकमणी। वे सुदर्शन चक्रधारी, योगेश्वर, नीतिनिपुण, युद्ध में पाण्डवों को विजय दिलाने वाले, कंस, जरासंध आदि दुष्ट पापाचारी राजाओं का वध करने वाले थे।

परन्तु भागवत पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में श्री कृष्ण जी पर दूध-दही-मक्खन की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासलीला क्रीड़ा आदि झूठे दोष लगाए हैं। गोपालसहस्त्रनाम में श्री कृष्ण जी को चौरजारशिखामणि तक का खिताब दिया गया है जिसका अर्थ है चोरों और जारों का सरदार। ऐसी बातों को पढ़-पढ़ा और सुन-सुना कर दूसरे मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं और हिन्दुओं का मज़ाक उड़ाते हैं।

महाभारत में वर्णित श्री कृष्ण जी का स्वरूप ही उनका वास्तविक स्वरूप है। भागवत आदि पुराण महर्षि वेद व्यास के बनाए हुए नहीं हैं। ये बहुत बाद में बनाए गए ग्रन्थ हैं जिनमें स्वार्थी लोगों ने श्री कृष्ण जी पर ऐसे झूठे लांछन लगाए हैं। आर्य समाज श्री कृष्ण जी के उसी रूप को स्वीकार करता है जो महाभारत में बताया गया है।

8. गंगा नदी का महत्त्व-गंगा एक बड़ी नदी है जो भारतवर्ष के बहुत से भूभाग में से होकर गुजरती है। देश की बहुत सी खेतीबाड़ी तथा अन्य जरूरतें गंगा के पानी पर निर्भर हैं। इसलिए देश के लिए गंगा का बड़ा महत्त्व है। ऐसा मान लेना कि गंगा में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं निरी अज्ञानता है। पाप या पुण्य का फल तो भोगे बिना नहीं मिटता। यही न्यायकारी प्रभु का अटल विधान है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्धयन्ति मनः सत्येन शुद्धयति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति।।

(मनुस्मृति 5-3)

अर्थ-जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या से और तप से (सब प्रकार के कष्ट उठाकर भी धर्म का आचरण करने से) जीवात्मा पवित्र होती है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। आर्य समाज की यही मान्यता है।

9. सुख-दुख का कारण-कोई भी परेशानी आ पड़ने पर सनातनधर्मी लोग ग्रहों को उसके कारण मानते हैं। फिर ग्रहों को शान्त करने के लिए तथा मुसीबत से निकालने का उपाय ढूंढने के लिए तथा-कथित पण्डितों के पास जाते हैं। ऐसे पण्डित लोग इधर-उधर की बातें करके उन्हें चक्रों में डालते हैं और वे झूठे आश्वासन देकर उनसे धन ऐंठते हैं।

आर्य समाज मानता है कि सुख-दुख मनुष्य के अपने अच्छे और बुरे कामों का फल है। यह ईश्वर की न्याय व्यवस्था है-जैसी करनी, वैसी भरनी, जो बोया सो काटा। कोई पण्डित, पाधा, ज्योतिषी इस व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। ग्रह जड़ है, जैसे हमारी पृथ्वी है। वे ज्ञानहीन है, बुद्धिहीन है। वे किसी से प्रेम या द्वेष नहीं कर सकते। ग्रहों का प्रभाव सबके ऊपर एक सा रहता है। जैसे सूर्य का प्रकाश और गर्मी सबके लिए है।

10. व्रत-सनातनधर्मी लोग किसी विशेष दिन कम खाना, बदलकर खाना, कुसमय खाना या न खाने को व्रत मानते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध में वेद तो कुछ और ही कहता है जिसे आर्य समाज मानता है।

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।।

(यजुर्वेद, 1-5)

अर्थ-हे सत्य धर्म के उपदेशक, व्रतों के पालक प्रभु! मैं असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने का व्रत लेता हूं। आप मुझे ऐसा सामर्थ्य दो कि मेरा यह व्रत सिद्ध हो अर्थात् मैं अपने व्रत को पूरा करूं।

11. दान-सुपात्र को दान देना एक शुभ कर्म है, परन्तु कुपात्र को देना पाप है।

सुपात्र कौन-गरीब, रोगी, अंगहीन, अनाथ, कोढ़ी, विधवा या कोई भी जरूरतमंद विद्या और कला कौशल की वृद्धि के लिए, गौशाला, अनाथालय, हस्पताल आदि दान के सुपात्र हैं।

न पापत्वाय रासीय। (अथर्ववेद) अर्थ-मैं पाप के लिए कभी दान न दूं।

धनिने धनं मा प्रयच्छ। दरिद्रान्भर कौन्तेय। (महाभारत)

अर्थ-हे युधिष्ठिर! धनवानों को धन मत दो, गरीबों की पालना करो।

भरे पेट को रोटी देना उतना ही गलत है जितना स्वस्थ को औषधि। रोटी भूखे के लिए है और औषधि रोगी के लिए है। समुद्र में हुई वर्षा व्यर्थ है।

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते। वार्यन्नगौमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम्।

(मनुस्मृति 4-233)

अर्थ-संसार में जितने दान हैं, अर्थात् जल, अन्न, गौ, भूमि, वस्त्र, तिल, सुवर्ण, घी आदि इन सब दानों से वेद विद्या का दान अति श्रेष्ठ है।

12. आर्य और हिन्दू शब्द-वेद, शास्त्र, मनुस्मृति, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी प्राचीन ग्रन्थों में आर्य शब्द ही मिलता है, हिन्दू नहीं। संस्कृत के कोष 'शब्दकल्पद्रुम' में आर्य शब्द के अर्थ-पूज्य, श्रेष्ठ, धार्मिक, उदार, न्यायकारी, मेहनत करने वाला आदि किए हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

(ऋग्वेद 9-63-5)

अर्थ-सारे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ।

अनार्य इति मामार्याः पुत्र विक्रायकं ध्रुवम्। (वाल्मीकि रामायण-अयोध्या काण्ड)

अर्थ-राजा दशरथ राम को वन में भेजना न चाहते थे, वे कहते हैं-आर्य लोग (सज्जन) मुझ पुत्र बेचने वाले को निश्चय ही अनार्य (दुष्ट) बताएंगे।

हिन्दू शब्द मुसलमानों ने घृणा के रूप में हमें दिया है। यह फारसी भाषा का शब्द है। फारसी भाषा के शब्दकोश में 'हिन्दू' का अर्थ है-चोर, डाकू, गुलाम, काफिर, काला आदि। मुसलमान आक्रमणकारी जब भारत में आए उन्होंने यहां के लोगों को लूटा, मारा तथा पकड कर गुलाम बनाकर अपने साथ अपने देश में ले गए। वहां ले जाकर उनसे अनाज पिसवाया, घास खुदवाया, मल-मूत्र आदि उठवाया तथा बाजारों में बेचा। तब उन्होंने यहां के लोगों को 'हिन्दू' नाम दिया।

आठवीं सदी से पहले यानि कि मुसलमानों के आने से पहले भारतवर्ष में हिन्दू शब्द का प्रचलन न था, सब जगह आर्य और आर्यवर्त्त शब्द ही प्रसिद्ध थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-सनातन धर्म.....

चीनी यात्री ह्यूनसांग ने भारत में सातवीं सदी में (सन् 631 से 645 तक) आया था। वह इस देश का नाम आर्य देश लिखता है।

सन् 1870 में काशी में टेढ़ा नीम नामक स्थान पर काशी के राजा के अधीन एक धर्मसभा हुई। सभा में विश्वनाथ शर्मा, बाबा शास्त्री आदि 45 विद्वानों ने विचार विमर्श के बाद यह व्यवस्था दी थी कि हिन्दू नाम हमारा नहीं है, यह मुसलमानों की भाषा का ही है और इसका अर्थ है अधर्मी। अत: इसे कोई स्वीकार न करे।

हिन्दू शब्दो हि यवनेषु अधर्मीजन बोधकः। अतो नाहर्ति तत् शब्द बोध्यतां सकलो जनः।।

13. हम आर्य, जो आजकल हिन्दू नाम से जाने जाते हैं, ही भारतवर्ष के मूल निवासी हैं-संसार में सबसे पुराने ग्रन्थ हैं तो वे हैं आर्यों के ग्रन्थ-वेद। संसार में सबसे पुराना कोई साहित्य है तो वह है आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में ऐसा नहीं लिखा है कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आए थे। इस देश का नाम पहले आर्यावर्त्त था ऐसा बहुत से ग्रन्थों में लिखा मिलता है। आर्यावर्त्त से पहले इस देश का क्या नाम था कहीं भी नहीं लिखा मिलता। अत: निश्चित है कि आर्यों से पहले इस देश में कोई और न था और न ही इस देश का कोई और नाम था। इसलिए यह बात कि आर्य इस देश में कहीं बाहर से आकर बसे थे सत्य नहीं है।

आर्यो (हिन्दुओं) में फूट डालने के लिए द्रविड़ों को आर्यों से भिन्न बताया गया था। जबकि वास्तविकता यह है कि द्रविड़ शब्द आर्य ब्राह्मणों के दस कुलों में से पांच कुलों में होता है जिसमें आदि शंकराचार्य जैसे ब्राह्मण पैदा हुए।

पीछे रूस में एक अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी हुई थी। उसमें भारत सरकार के एक प्रतिनिधि मण्डल ने भी भाग लिया था। उस प्रतिनिधि मण्डल में इतिहासविद, भाषा वेज्ञानिक तथा पुरातत्ववेत्ता थे। उन्होंने गोष्ठी में भाग लेते हुए आर्यों (हिन्दुओं) के ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि से आकर भारत में बस जाने की बात का एकमत होकर खण्डन किया था और उनके इस मत को गोष्ठी में उपस्थित सभी देशों के प्रतिनिधियों ने बहुत सराहा था। यह समाचार हिन्दुस्तान टाइम्स के 31 अक्तूबर 1977 के अंक में छपा था। ईरान के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाया जाता रहा है। आर्यों का एक समूह ईरान की ओर आया और यहीं बस गया। इसलिए अपने नाम पर उन्होने इस देश का नाम ईरान रखा। हम उन आर्यों की सन्तान हैं।

डेविड फ्रौले ने एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है दी मिथ ऑफ दी आर्यन इनवेजन ऑफ इण्डिया। वह लिखता है कि आर्यों के भारतवर्ष में कहीं बाहर से आने की बात तथा यहां के लोगों पर हमले की बात दोनों ही निराधार है। वह लिखता है कि भारत में आर्यों तथा अन्यों में धर्म और संस्कृति के आधार पर कोई भी भेद नहीं है। आर्य भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का मत है कि आर्य इसी देश के मूल निवासी हैं। उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में महाभारत काल से लेकर मुसलमानों का शासन आरम्भ होने तक यानि कि अब से पांच हजार वर्ष पूर्व से लेकर आठ सौ वर्ष पूर्व तक दिल्ली में शासन करने वाले सभी राजाओं के नाम तथा उनके शासन काल दिए हैं। इनमें महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराजा यशपाल तक एक सौ चौबीस राजे हुए जिन्होंने कुल चार हजार एक सौ सत्तावन वर्ष, नौ महीने, चौदह दिन राज्य किया। महाराजा युधिष्ठिर से पहले के सभी राजाओं के नाम महाभारत में लिखे हैं। इस बात से पूरी तरह प्रमाणित हो जाता है कि आर्य ही सदा से इस भूमि पर रह रहे हैं।

14. तुलसी-एक औषधीय पौधा है। जैसे अदरक, हल्दी, सौंफ, लहसुन आदि शरीर के लिए हितकारी हैं ऐसे ही तुलसी भी शरीर से बहुत से रोग दूर करती है।

15. तप-कष्ट उठाकर भी सत्य और पक्षपात रहित न्याय का आचरण, परोपकार आदि शुभ कर्म करने का नाम तप है। धूनी लगा के सेंकने का नाम तप नहीं है।

16. तीर्थ-जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि अर्थात् जिन करके मनुष्य दुखों से तरें उनका नाम तीर्थ है। वेद आदि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, योगाभ्यास, परोपकार, सत्य का आचरण, ज्ञान विज्ञान आदि शुभ गुण दुखों से तारने वाले हैं, अत: ये तीर्थ है।

17. भाग्य क्या है-अपने ही किए हुए अच्छे-बुरे कर्म, जिनका फल हमें पहले नहीं मिला, अब मिल रहा है, भाग्य कहलाता है।

18. फूल तोड़ना पाप है-ईश्वर ने फूल सुगन्धि और सुन्दरता के लिए दिए हैं। डाली से तोड़ने के थोड़ी देर बाद वे सुन्दरता और सुगन्ध दोनों खो बैठते हैं। पानी में पडकर सड़कर वे दुर्गन्ध देते हैं जो प्राणियों के लिए अहितकर है। इस प्रकार सुगन्ध को दुर्गन्ध में बदल देना पाप कर्म है। डाली पर रहते हुए फूल सूखने पर भी कभी दुर्गन्ध नहीं देता।

19. जगराता धार्मिक कर्म नहीं है, अधार्मिक कर्म है-जगराता न धर्म का काम है और न ही पुण्य का काम है। जगराता में ऊंची आवाज में लाऊडस्पीकर लगाकर सैंकड़ों-हजारों लोगों को परेशान किया जाता है, विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुकावट पड़ती है, रोगियों का चैन छिनता है, सोने वाले सो नहीं सकते। शोर प्रदूषण बहुत बढ़ जाता है जो कानों के लिए तथा दिमाग के लिए हानिकर है। ईश्वर को तो कुछ भी सुनाने के लिए ऊंची आवाज़ की जरूरत नहीं है। वह तो आपके मन की बात भी जानता है। दूसरे लोगों को जबरदस्ती सुनाने का आपका कोई अधिकार नहीं है। सब लोगों की अपनी-अपनी मान्यताएं हैं। बहुत से लोग जगराते को देखना या सुनना नहीं चाहते। आप उनकी आजादी छीन रहे हैं।

आर्य समाज चम्बा का द्विवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज चम्बा हिमाचल प्रदेश के द्विवार्षिक चुनाव दिनांक 07-06-2015 को आर्य समाज के सभागार में श्री खुशहाल चन्द्र बख्शी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। इस चुनाव में सर्वसम्मति से श्री सुखलाल शास्त्री को प्रधान और विक्रमादित्य महाजन को मन्त्री चुना गया तथा कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सभा के गठन का अधिकार दिया गया। कार्यकारिणी तथा अन्तरंग सदस्यों की सूची इस प्रकार है-: संरक्षक-पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री भगवती प्रसाद पन्त, प्रधान-श्री सुखलाल शास्त्री, वरिष्ठ उपप्रधान-श्रीमती विष्णु देवी, उपप्रधान-श्रीमती शान्ता सल्होत्रा, मन्त्री-श्री विक्रमादित्य महाजन, उपमन्त्री- श्री अमर सिंह शास्त्री, श्रीमती रूकमणी आर्या, कोषाध्यक्ष- श्री योगराज आचार्य, सहकोषाध्यक्ष- श्रीमती सन्तोष शर्मा, मुख्य परामर्शदाता- श्री आचार्य महावीर सिंह, परामर्शदाता- श्री खुशहाल चन्द्र बख्शी, अन्तरंग सदस्य- श्रीमती अनूपा पन्त, श्रीमती निरन्जना चोपड़ा, श्रीमती कुसुम देवी, श्रीमती सरीन देवी, श्री मुकेश शर्मा, श्री करतार चन्द बडोत्रा।

-विक्रमादित्य महाजन मन्त्री आर्य समाज चम्बा

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज जालन्धर छावनी का वेद प्रचार सप्ताह 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी के प्रात: एवं सायं वेद प्रवचन होंगे और श्री अरुण कुमार के मधुर भजन होंगे। सभी धर्म प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि वह इस अवसर पर धर्म लाभ उठावें।

पंजाबी सभ्यता-संस्कृति की शिक्षा

दैनिक जागरण से यह ज्ञात हुआ कि जी.एन.डी.यू के स्कूल आफ पंजाबी स्टडीज़ के सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षक स. परमजीत सिंह सिद्धू अमेरिका में बसे पंजाबी युवकों को पंजाबी संस्कृति की शिक्षा देने हेतु वहां के शिक्षकों को पारंगत करने के लिए अमृतसर में शिक्षा दे रहे हैं। उनका यह प्रयास अत्यन्त सराहनीय है। परन्तु मैं उनका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि उन्होंने अपनी शिक्षा में जो सर्वप्रथम पाठ पढ़ाया, वह ''तमसो मा ज्योतिगर्मय'' का था। जो भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों को संजोए हुए है। इसे आपने ऋग्वेद का श्लोक बताया है। वस्तुत: यह सत्य नहीं है। यह उक्ति शतपथ ब्राह्मण एवं बृहदारण्यकोपनिषद् अ. मन्त्र 28 से उद्धृत है। वेदों में श्लोक नहीं अपितु मन्त्र होते हैं। श्लोक लौकिक संस्कृत में होते हैं। यदि किसी वचन के ग्रन्थ का पता ज्ञात न हो तो सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि संस्कृत में ऐसा कहा गया है अथवा यह संस्कृत की उक्ति है।

आशा है कि प्राध्यापक महोदय भविष्य में ऐसी प्रस्तुति की प्रामाणिकता का भी ध्यान रखेंगे।

शुभकामनाओं के साथ-

-वेद प्रकाश शास्त्री

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार दिनांक 6, 7, 8 मार्च 2016 को किया जाएगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियां अभी से अंकित कर लें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनाएं। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्य समाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर, श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर का वेद प्रचार सप्ताह सोमवार 17 अगस्त 2015 से रविवार 23 अगस्त 2015 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी यज्ञ के ब्रह्मा होंगे तथा माता सत्याप्रिया जी व श्री राजेश प्रेमी जी के भजन होंगे। प्रात:काल का समय 7:15 से 9:15 तक रहेगा जिसमें यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे। रात्रिकाल में 7:45 से 9:15 तक भजन व प्रवचन होंगे। रविवार 23 अगस्त का कार्यक्रम प्रात: 8:00 बजे से 12:30 बजे तक होगा। कार्यक्रम के पश्चात ऋषि लंगर का आयोजन किया जाएगा। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। **-विनोद कुमार सेठ प्रधान आर्य समाज**

लुधियाना में विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन

आर्य समाज किदवई नगर, आर्य पुरोहित सभा लुधियाना और आर्य वीर दल द्वारा संयुक्त रूप से विशाल वैदिक सत्संग का आयोजन 26.07.15 को आर्य समाज किदवई नगर में करवाया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में श्री राजेन्द्र शास्त्री द्वारा हवन करवाया गया। जिसमें मुख्य यजमान श्री संजीव कुमार चड्डा एवं सीमा चड्डा, श्री रणवीर पाहवा एवं निशा पाहवा, श्री नितिन महाजन एवं गायत्री महाजन और श्री नरेन्द्र वर्मा एवं सुमन वर्मा थे। यज्ञ के पश्चात् श्री राजेन्द्र शास्त्री द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किए गए। उसके पश्चात् ब्रह्मचारियों श्री अरविंद शास्त्री एवं मोहन लाल शास्त्री द्वारा योगासन एवं कंठ द्वारा सरिया मोड़ने का सफल प्रदर्शन किया गया। इनके इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री संयज विर्माणी का विशेष योगदान रहा। इसके पश्चात् पंडित उपेन्द्र शास्त्री (चंडीगढ़ वाले) द्वारा मधुर भजन प्रस्तुत किए गए। मंच का संचालन पंडित योगदार शास्त्री द्वारा बखूबी किया गया। कार्यक्रम में अमित गौसाई, गुरदीप नीटू एवं श्री रमेश बांगड़ विशेष रूप से आमंत्रित महानुभाव थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में ज़िला प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा, श्री विजय सरीन, श्री श्रवण बत्रा, श्री आत्म प्रकाश, श्री सुरेश कुमार चड्डा, श्री वेदप्रिय चावला, श्री चरणजीत पाहवा, श्री सुरेन्द्र कुमार टंडन, श्री रमाकांत महाजन, आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान श्री गरीब दास जी एवं सभी सदस्यों द्वारा तथा आर्य वीर दल के सुमित टंडन, गौरव पाहवा, अर्पण पाहवा, मोहित महाजन, अखिल सूद, सिद्धान्त अबरोल, पतंजलि योगपीठ से श्री सुभाष अबरोल एवं मास्टर अनिल का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, श्रीमती अंजू गुप्ता, श्री अनिल कुमार, श्री पदमओल, श्री जगजीव बस्सी, श्री अजय बत्रा, श्रीमती विनोद गांधी आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम को सपल बनाने के लिए एक दिन पूर्व 25.7.15 दिन शनिवार को संध्या फेरी का आयोजन किया गया। जो आर्य समाज हबीबगंज से शुरू होकर आर्य समाज किदवई नगर में समाप्त हुई। संध्या फेरी में सफल आयोजन में श्री संजीव कुमार चड्डा, पंडित योगराज शास्त्री, पंडित कर्मवीर शास्त्री, पंडित राजेन्द्र शास्त्री, पंडित बालकृष्ण शास्त्री एवं भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों का विशेष योगदान रहा। संध्या फेरी का रास्ते में फल-फूलों द्वारा स्वागत किया गया। सत्संग के अंत में पुरोहित सभा के प्रधान पंडित बाल कृष्ण शास्त्री द्वार एवं आर्य समाज किदवई नगर के प्रधान श्री गरीब दास द्वारा आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया गया। अंत में ऋषि लंगर के पश्चात् सत्संग की समाप्ति हुई।

पृष्ठ 4 का शेष-राजधर्म का ....

इन्द्रो जयाति न परा जयाता, अधिराजो राजसु राजयातै। चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह।।

(अथर्व० 6-98-1)

हे मनुष्यो! जो (इह) इस मनुष्य के समुदाय में (इन्द्र:) परम ऐश्वर्य का कर्त्ता, शत्रुओं को (जयाति) जीत सके (न पराजयातै) जो शत्रुओं से पराजित न हो, (राजसु) राजाओं में (अधिराज:) सर्वोपरि विराजमान (राजयातै) प्रकाशमान हो, (चर्कृत्य:) सभापति होने को अत्यन्त योग्य, (ईड्य:) प्रशंसनीय गुण कर्म-स्वभावयुक्त, (वन्द्य:) सत्करणीय, (चोपसद्य:) समीप जाने और शरण लेने योग्य, (नमस्य:) सबका माननीय (भव) होवे, उसी को सभापति राजा करे। यजुर्वेद (9-40) का कथन है-

इमं देवाऽसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायम हते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।।

हे (देवा:) विद्वानों, राजप्रजाजनों! तुम (इमम्) इस प्रकार के पुरुष को (महते क्षत्राय) बड़े चक्रवर्तिराज्य, (महते ज्यैष्ठयाय) सबसे बड़े होने, (महते जानराज्याय) बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त राज्य पालने और (इन्द्रस्येन्द्रियाय) परम ऐश्वर्ययुक्त राज्य और धन के पालने के लिए (असपत्नम् सुवध्वम्) सम्मति करके सर्वत्र पक्षपात रहित, पूर्णविद्याविनययुक्त, सबके मित्र, सभापति राजा को सर्वाधीश मानकर सब भूगोल को शत्रुरहित करें।

आगे इसी सम्मुल्लास में मनु जी का हवाला देते हुए वे सभापति के गुणों का विवेचन करते हैं कि वह सभेश राजा इन्द्र अर्थात् विद्युत के समान शीघ्र ऐश्वर्यकर्त्ता, वायु के समान सबका प्राणवत् प्रिय और हृदय की बात जाननेहारा, यम-पक्षपातरहित न्यायाधीश के समान वर्त्तनेवाला, सूर्य के समान न्याय, धर्म, विद्या का प्रकाशक, अन्धकार अर्थात् अविद्या, अन्याय का निरोधक, अग्नि के समान दुष्टों का भस्म करनेहारा, वरुण अर्थात् बांधने वाले के सदृश दुष्टों को अनेक प्रकार से बांधने वाला, चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्ददाता, धनाध्यक्ष के समान कोशों का पूर्ण करने वाला सभापति होवे। (यजु. 4, 6, 7)

जो सूर्यवत् प्रतापी, सबके बाहर और भीतर मनों को अपने तेज से तपानेहारा, जिसको पृथ्वी में करड़ी दृष्टि से देखने में कोई भी समर्थ न हो और जो अपने से अग्नि, वायु, सूर्य, सोम, धर्मप्रकाशक, धनवर्द्धक, दुष्टों का बन्धनकर्त्ता, बड़े ऐश्वर्य वाला, होवे, वही सभाध्यक्ष-सभेश होने के योग्य होवे।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में 27 जुलाई 2015 से 3 अगस्त 2015 सोमवार तक योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से पधारे योगाचार्य मनीष जी द्वारा योग के लाभ व क्रियाएं बताई। इस योग शिविर में आर्य समाज के सदस्यों के साथ शहीद भगत सिंह नगर, गुरू अमर दास नगर, कालिया कालोनी व अन्य स्थानों के योग प्रेमियों ने भाग लिया। योगाचार्य मनीष ने कहा कि यदि मनुष्य को अपने जीवन में किसी भी प्रकार की कोई भी समस्या चाहे वो शारीरिक हो या मानसिक हो उसे योग के द्वारा दूर किया जा सकता है। योगाभ्यास, प्राणायाम के द्वारा प्रत्येक आयु वर्ग के लोगों को 80 से 90 प्रतिशत आरोग्य प्राप्त हो सकता है। अत: आप समझ सकते हैं कि योगाभ्यास रोग निवारण में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योग शिविर के प्रबन्धक व आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य ने कहा कि योगाचार्य श्री मनीष जी ने आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में जो अपना अमूल्य समय दिया जिसके द्वारा सभी नगर निवासी लाभान्वित हुए। इस योग शिविर में बहुत सी सार्थक प्रतिक्रियाएं आई तथा लोगों ने अपने-अपने अनुभव बताए। इस योग शिविर में शहीद भगत सिंह नगर के निवासियों व अन्यों का सराहनीय योगदान रहा। विशेष रूप से शिविर में पार्ष वेद वशिष्ठ, सुभाष आर्य, इन्दु आर्या, अनु आर्या, अमन आर्य, सुरेश ठाकुर, अनिल अरोड़ा, ईश्वर चन्द्र रामपाल, स्वर्ण शर्मा, दीपक अग्रवाल, चौ. हरि चन्द, नरेन्द्र कुमार, शिवा शास्त्री, संगीता मल्होत्रा, मनु आर्य, अनिल मिश्रा, पवन शुक्ला, ओम प्रकाश मैहता, भूपेन्द्र उपाध्याय, हर्ष लखनपाल, राजीव शर्मा, पूनम, मीनाक्षी, कोमल ज्योति, प्रियांजलि, सोनाली, शोभा कुमारी, रमेश मुटरेजा, प्रदीप ठाकुर, राजेश पासी, डा. निर्मल कुमार, राजीव कुन्द्रा, पवन शर्मा, संदीप मल्हौत्रा, विजयलक्ष्मी शर्मा, राजेश वर्मा व आर्य समाज के अन्य सदस्यों ने भाग लिया। **-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज**

वेदवाणी

सरस्वती-माता ज्ञानदेवी बड़े भारी ज्ञान समुद्र को प्रकाशित करती है

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति।।

-ऋ० १/३/१२

ऋषि-मधुच्छन्दाः।। देवता-सरस्वती।। छन्दः-गायत्री।।

विनय-ज्ञान की सच्ची जिज्ञासा होते ही यह अनुभव होने लगता है कि अरे, संसार में तो बड़ा ज्ञातव्य है, एक से एक अद्भुत विद्या है, जिस विषय में देखो उसी विषय में ज्ञान पाने का इतना क्षेत्र है कि मनुष्य कई जन्मों में भी उसका पार नहीं पा सकता। तब दिखता है कि मनुष्य के सामने न जाने हुए ज्ञान का एक अनन्त समुद्र भरा पड़ा है। यह देखने वाले मनुष्य नम्र हो जाते हैं। सरस्वती देवी के झण्डे के नीचे आने वालों को सबसे पहले तो यही पता लगा करता है कि ज्ञेय अनन्त है, हमारे ज्ञातव्य संसार का पार नहीं है और हम तुच्छ लोग तो अपनी क्षुद्र इन्द्रियों और बुद्धि के लिए हुए इसके एक किनारे खड़े हैं। विद्यादेवी पहले तो इस बड़े भारी समुद्र को ही हमारे लिए प्रकाशित करती है, इसके पार तो पीछे पहुंचाती है। पहले हमें यह अनुभव होना चाहिए कि ज्ञेय अनन्त है। ज्ञान की अनन्तता तो हमें पीछे दिखेगी। सरस्वती देवी जिधर-जिधर अपने "केतु" को अपने झण्डे को ले जाती है, अर्थात् जिधर-जिधर अपनी प्रज्ञापक शक्ति को फिराती है, वहां-वहां पता लगता जाता है कि अरे, यह भी एक बड़ा उत्तम ज्ञेय क्षेत्र है, यह भी एक बड़ा भारी ज्ञेय क्षेत्र है। एवं हरेक क्षेत्र को हमारे लिए जगाती जाती है और फिर सब बुद्धियों को विशेष रूप से दीप्त भी करती जाती है, अर्थात् जिस-जिस वस्तु की गहराई में जाकर हम जानना चाहते हैं, उस-उस वस्तु के तत्त्व को, उसके सच्चे स्वरूप को भी हमारे लिए चमका देती है। तब हम जिस विषयक बुद्धि पाना चाहें उसी विषय को ज्ञान की यह देवी हमारे लिए प्रदीप्त कर देती है। तभी अनुभव होता है कि सभी बुद्धियों में वही देवी प्रदीप्त हो रही है, वही चमक रही है, सर्वत्र उसी का राज्य है। सरस्वती देवी के सच्चे स्वरूप का या ज्ञान के आनन्त्य का (जिसके सामने ज्ञेय कुछ भी नहीं होता) अनुभव उसी अवस्था में पहुंचने पर होता है।

-वैदिक विनय से साभार

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्धि दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

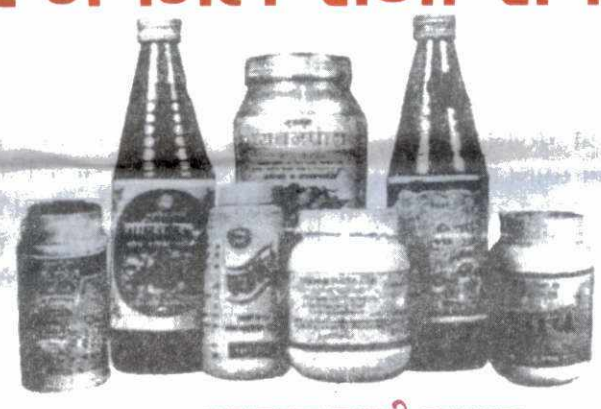

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।